12 रानी



महादेवी वर्मा

(जन्म : सन् 1907 ई. : निधन : सन् 1987 ई.)

हिन्दी साहित्य में महादेवी वर्मा अर्थात् 'मैं नीर भरी दु:ख की बदरी' और तुम को नींव में ढूँढा, तुममें ढूँढी पीड़ा।' कहनेवाली सहृदय, भावुक, अत्यंत संवेदनशील और समग्र नीव सृष्टि पर अनुकंपावर्षेण करनेवाली छायावादी युग की अप्रतिम रचनाकार। छायावादी युग के चार स्तंभ गिने जाते हैं- प्रसाद, पंत, महादेवी और निराला। इनमें प्रसाद के साथ सदैव इतिहास बोध रहा तो पंत प्रकृति के कोमल कांत पदावली के रचनाकार के रूप में पहचाने गये। निराला अपनी ओजस्विता और रौद्रता के लिए तो महादेवी धीर गंभीर दर्द की दास्तान सुनानेवाली कवयित्री के रूप में पहचानी गयी।

फर्रुखाबाद में (उत्तर प्रदेश) जन्मी-महादेवी सही अर्थ में एक विदूषी और प्रगल्भा नारी के रूप में समग्र जीवन जी गयी। मुख्यतया महादेवी कवयित्री ही-रही किंतु 'स्मृति की रेखाएँ' जैसी रचना के द्वारा उत्तम गद्यकार-रेखाचित्रकार के रूप में अपनी पहचान बनाने में सफल रही है। प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या और कुलगुरु के पद पर रह कर शिक्षा के क्षेत्र में आपने अनुपम योगदान दिया है। नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, अतीत के चलचित्र और स्मृति की रेखाएँ आदि आप की बहुचर्चित एवं लोकप्रिय रचनाएँ हैं।

यहाँ 'रानी' नामक एक घोडी उनके दो साथी 'निक्की' और 'रोजी' के साथ आयी है- सम्मिलित है जिसका बड़ा मार्मिक और भावुकतापूर्ण शैली में चित्र अंकित किया है। ऐसा लगता है यह नेवला, यह कुत्ती और यह घोड़ी हमारे सामने ही हैं। पशु-पंछी और निर्दोष भोले ऐसे प्राणियों के प्रति महादेवीजी का स्नेह और प्रेम छलकता नज़र आता है।

रियासत होने के कारण इंदौर में शानदार घोड़ों और सवारों का आधिक्य था। इसके अतिरिक्त हम अंग्रेजों के बच्चों को छोटे टट्टूओं या सफेद गधों (जिसकी जाति के संबंध में रामा ने हमारा ज्ञानवर्धन किया था।) पर घूमते देखते थे। रामा की कहानियों में तो राजा, अपराधियों को गधे पर चढ़ाकर देश निकाला देता था। इन्हें गधों पर बैठकर प्रसन्नता से घूमते देखकर विश्वास करना कठिन था कि इन्हें दंड मिला है। रामा के पास हमारी जिज्ञासा का समाधान था। इन्हें विलायत में गधे पर बैठने का दंड देकर भारत भेजा गया है, क्योंकि वहाँ यह वाहन नहीं है।

एक दिन हम तीनों ने बाबूजी को मौखिक स्मृतिपत्र (मेमारंडम) दिया कि हमारे पास छोटा घोड़ा न रहना अन्याय की बात है। यदि अन्य बच्चों को घोड़े पर बैठने का अधिकार है तो हमें भी वह अधिकार मिलना चाहिए।

बाबूजी ने हँसते हुए पूछा- सफेद टट्टू पर बैठोगे? 'तुम कहो, तुम कहो' के साथ ठेलमठाल के उपरांत मैंने अगुआ होकर गंभीर मुद्रा में उत्तर दिया- सफेद टट्टू तो गधा होता है, जिस पर बैठाकर सजा दी जाती है।

पता नहीं हमारे ज्ञान के वजस्त्र स्त्रोत रामा को बाबूजी ने डाँटा या नहीं, परंतु कुछ दिन बाद हमने देखा कि एक छोटा-सा चाकलेटी रंग का टट्टू आँगन के पश्चिम वाले बरामदे में बाँधा गया है। बरामदा तो घोड़े बाँधने के लिए बनाया नहीं गया था, अत: बाहर से टट्टू को लाने के लिए दीवाल में एक नया दरवाजा लगाया गया और उसकी मालिश करने तथा खाने, पीने, घूमने आदि की उसकी देखरेख के लिए छुट्टन नाम का साईस रखा गया।

अब तो हम उस छोटे टट्टू से बहुत प्रभावित और आतंकित हुए। हमारे तथा हमारे अन्य साथी जीवों के लिए न मकान में कोई परिवर्तन हुआ न कोई विशेष नौकर रखा गया। रामा को तो नौकर कहा नहीं जा सकता, क्योंकि वह तो डाँटने-फटकारने के अतिरिक्त हमारे कान भी खींचता था और हमारी खिड़की तक दरवाजे में परिवर्तित नहीं हो सकी, जिससे हम रोजी और निक्की के साथ कूदने के कष्ट से मुक्त हो सकते। बाबूजी से यह सुनकर भी कि वह टट्टू हमारी सवारी के लिए आया है। हम सब चार-पाँच दिन उससे रुष्ट और अप्रसन्न ही घूमते रहे, परंतु अंत में उसने हमारी मित्रता प्राप्त ही कर ली। रामा से उसका नाम पूछने पर ज्ञात हुआ कि उसे ताजरानी कहकर पुकारा जाता है। ताजमहल का चित्र हमने देखा था और रामा और कल्लू को माँ की सभी कहानियों में रानी के सुख-दु:ख की गाथा सुनते-सुनते हम उसके प्रति बड़े सदय हो गए थे। ताजमहल जैसे भवन की रानी होने पर भी यह वहाँ से कहानी की रानी की तरह निकाल दी गई है, यह कल्पना करते ही हमारी सारी ईर्ष्या और सारा रोष करुणा से पिघल गया और हम उसे और अधिक आराम देने के उपाय सोचने लगे।

वह इतनी सुंदर थी कि अब तक उसकी छवि आँखों में वसी जैसी है। हल्का चाकलेटी चमकदार रंग जिस पर दृष्टि फिसल जाती थी। खड़े छोटे कानों के बीच में माथे पर झूलता अयाल का गुच्छा, बड़ी, काली-स्वच्छ

और पारदर्शी जैसी आँखें, लाल नथूने जिन्हें फुला-फुलाकर चारों ओर की गंध लेती रहती। उजले दाँत और लाल जीभ की झलक देते हुए गुलाबी ओठोंवाला लंबा मुँह जो लोहा चबाते रहने पर भी क्षत-विक्षत नहीं होता था। ऊँचाई के अनुपात से पीठ की चौड़ाई अधिक है, सुडौल, मजबूत पैर और सघन पूँछ जो मक्खियाँ उड़ाने के क्रम में मोरछल के समान उठती-गिरती रहती थी। उस समय यह सब समझने की बुद्धि नहीं थी, परंतु इतने दीर्घ काल के उपरांत भी स्मृतिपट पर वे रेखाएँ ऐसे उभर आती है जैसे किसी अदृश्य स्याही से लिखे अक्षर अग्नि के ताप से प्रत्यक्ष होने लगते हैं।

हम बार-बार सोचते हैं कि वह कुछ और छोटी क्यों न हुई। होती तो हम रोजी और निक्की के समान उसे भी अपने कमरे में रख लेते।

रानी को अपने कमरे में ले जाना संभव नहीं था, अत: अस्तबल बना हुआ बरामदा ही हमारी अराजकता का कार्यालय बना।

बरामदा घोड़े बाँधने के लिए तो बना नहीं था अत: उसकी दीवार में एक खुली आल्मारी और कई आतेताक थे। उन्हीं में हमारा स्वेच्छया विस्थापित और शरणार्थी खिलौनों का परिवार स्थापित होने लगा।

रानी की गर्दन में झूल-झूलकर, उसके कान और अयाल में फूल खोंस-खोंसकर और उसको बिस्कुट, मिठाई आदि खिला-खिलाकर थोड़े ही दिनों में हमने उससे ऐसी मैत्री कर ली कि हमें न देखने पर वह अस्थिर होकर पैर पटकने और हिनहिनाने लगती।

फिर हमारी घुड़सवारी का कार्यक्रम आरंभ हुआ। मेरे और बहिन के लिए सामान्य, छोटी पर सुंदर जीन खरीदी गई और भाई के लिए चमड़े के घेरेवाली ऐसी जीन बनवाई गई जिससे संतुलन खोने पर भी गिरने का भय नहीं था।

बाहर के चबूतरे पर खड़े होकर हम बारी-बारी से रानी पर आरूढ़ होते और छुट्टन साथ दौड़ता हुआ हमें घुमाता। सबेरे भाई-बहन घूमते और स्कूल से लौटने पर तीसरे पहर या संध्या समय मेरे साथ यह कार्यक्रम दोहराया जाता। परंतु ऐसी सवारी से हमारी विद्रोही प्रकृति कैसे संतुष्ट हो सकती थी? अस्तबल में रानी की गर्दन में झूलकर तथा स्टूल के सहारे उसकी पीठ पर चढ़कर भी हमें संतोष न होता था।

अंत में एक छुट्टी के दिन दोपहर में सब के सो जाने पर हम रानी को खोलकर बाहर ले आए और चबूतरे पर खड़े होकर उसकी नंगी पीठ पर सवारी करके बारी-बारी से अपनी अधूरी शिक्षा की पूरी परीक्षा लेने लगे।

यह स्वाभाविक ही था कि ताजरानी हमारी अराजक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो जाती। वास्तव में बालकों में चेतना के विभिन्न स्तरों का बोध न होकर सामान्य चेतना का ही बोध रहता है। अत: उनके लिए पशु, पक्षी, वनस्पति सब एक परिवार के हो जाते हैं।

निक्की रानी की पूँछ से झूलने लगता था, रोजी इच्छानुसार उसकी गर्दन पर उछलकर चढ़ती और नीचे कूदती थी और हम सब उसकी पीठ पर ऐसे गर्व से बैठते थे मानो मयूर सिंहासन पर आसीन हों।

रानी हम सब की शक्ति और दुर्बलता जानती थी। उसकी नंगी पीठ पर अयाल पकड़कर बैठनेवालों को वह दुल्की चाल से इधर-उधर घुमाकर संतुष्ट कर देती थी परंतु एक बार मेरे बैठ जाने पर भाई ने अपने हाथ की पतली संटी उसके पैरों में मार दी। चोट लगने की तो संभावना ही नहीं थी, परंतु इससे न जाने उसका स्वाभिमान आहत हो गया या कोई दु:खद स्मृति उभर आई। वह ऐसे वेग से भागी मानो सड़क, पेड़, नदी, नाले सब उसे पकड़-बाँध रखने का संकल्प किए हों।

कुछ दूर मैंने अपने आपको उस उड़नखटोले पर सँभाला, परंतु गिरना तो निश्चित था। मेरे गिरते ही रानी मानो अतीत से वर्तमान में लौट आई और इस प्रकार निश्चल खड़ी रह गई जैसे पश्चाताप की प्रस्तर प्रतिमा हो।

साथियों की चीख-पुकार से सब दौड़े और फिर बहुत दिनों तक मुझे बिछाने पर पड़ा रहना पड़ा। स्वस्थ होकर रानी के पास जाने पर वह ऐसी करुण पश्चातापभरी दृष्टि से मुझे देखकर हिनहिनाने लगी कि मेरे आँसू आ गए।

एक बार भाई के जन्मदिन पर नानी ने उसके लिए सोने के कड़े भेजे। सामान्यत: हम कोई भी नया कपड़ा

या आभूषण पहनकर रानी को दिखाने अवश्य जाते थे। सुंदर छोटे-छोटे शेरमुँहवाले कड़े पहनकर भाई भी रानी को दिखाने गया और न जाने किन प्रेरणा से वह दोनों कड़े उतारकर रानी के खड़े सतर्क कानों में वलय की तरह पहना आया।

फिर हम सब खेल में कड़ों की बात भूल गए। संध्या समय भाई के कड़े रहित हाथ देखकर जब माँ ने पूछ-ताँछ की तब खोज आरंभ हुई पर कहीं भी कड़ों का पता नहीं चला।

रानी अपने कान को खुरों से खोदती और हिनहिनाती रही। अंत में बाबूजी का ध्यान उसकी ओर गया और उन्होंने मिट्टी हटाने का आदेश दिया। किसी ने कुछ गहरा गुड्ढा खोदकर दोनों कड़े गाड़ दिए थे। दंड तो किसी को नहीं मिला, परंतु रानी सारे घर के हृदय में स्थान पा गई।

एक घटना अपनी विचित्रता में स्मरणीय है। एक सबेरे उठने पर हमने रानी के पास एक छोटे-से घोड़े के बच्चे को देखा। 'यह कहाँ था?' कह-कहकर हमने रामा को इतना थका दिया कि उसने निरुपाय घोषणा की कि वह नया जीव रानी के पेट में दाना-चारा खाकर सो रहा था। भाई ने उत्साह से पूछा 'और भी है' और रामा ने स्वीकृति में सिर हिलाया।

अब तो हम विस्मित भी हुए और क्रोधित भी। ये छोटे जीव कोई काम-धाम नहीं करते और हमको पीठ पर बैठाकर दौड़नेवाली रानी का दाना-चारा स्वयं खाकर उसके पेट में लेटे रहते हैं।

भाई ने कहा-रानी का पेट चीरकर हम कम-से-कम एक और बच्चा घोड़ा निकाल लें- तब बच्चे घोड़ों पर वे छोटे बहिन-भाई बैठेंगे और रानी मेरी सेवा में रहेगी। प्रस्ताव मुझे भी उचित जान पड़ा पर जब एक दोपहर को वह कहीं से शाक काटने का चाकू ले आया तब मेरे साहस ने जवाब दे दिया। एक और भी समस्या की ओर हमारा ध्यान गया। आखिर हम रानी का पेट सिएँगे कैसे? माँ की महीन-सी सुई से तो सीना संभव नहीं था। टाट सीने का बड़ा सूजा रामा अपनी कोठरी में रखता था जहाँ हमारी पहुँच नहीं थी। कुछ दिनों के उपरांत जब रानी का अश्व शिशु कुछ बड़ा होकर दौड़ने लगा तब हमें न अपना क्रोध स्मरण रहा और न प्रस्ताव।

शब्दार्थ और टिप्पणी

बदरी बादल **अनुकंपा** दया, भावना प्रकट करना **रियासत** राज्य **ठेलमठाल** चलना **विलायत** ब्रिटैन **विस्थापित** स्थान से छुटा हुआ **अस्तबल** घोड़ों का आवास **अयाल** लगाम, बागड़ौर, **संटी** सोटी **बरामदा** बरंडा

मुहावरे

आँखों में बसना हृदय में समाना, **जवाब दे देना** अंत हो जाना, नष्ट होना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) 'रानी' कौन-सी साहित्यिक विद्या है?

(2) लेखिका ने रानी के अलावा और कौन-कौन से चरित्र लिए है?

(3) लड़कों ने स्मृतिपत्र में किस अन्याय की बात लिखी थी?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के तीन-चार वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) रानी के साथ मित्रता स्थापित करने के लिए कैसे प्रयास किये गये?

(2) रानी की पीठ पर सवारी करने पर कौन-सी दुर्घटना घटित हुई? क्यों?

3. शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द लिखिए :

(1) ज्ञान में वृद्धि करनेवाला

(2) बच्चे सरलता से कर सकें ऐसी प्रवृत्तियाँ

(3) घोड़े पर बैठकर की जानेवाली सवारी

4. विरुद्धार्थी शब्द दीजिए :

(1) अपराधी (2) प्रसन्नता (3) दंड

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- रेखाचित्र 'रानी' में प्रस्तुत पालतु प्राणियों और उनकी विशेषताओं के बारे में जानकारी दें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'पशु और अबोल प्राणियों-पशुओं के साथ सद्‌भाव और प्रेमपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।' विषय पर कक्षा में परिचर्चा का आयोजन करें।
- महादेवी वर्मा के अन्य रेखाचित्र, संस्मरण 'गूँगिया', 'ठकुरीबाबा' आदि के बारे में पात्रों को जानकारी दें।

●